(19)

एम.एच.डी.

एम.ए. हिंदी कार्यक्रम

द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2014 एवं जनवरी 2015 सत्रों के लिए)

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1
एम.एच.डी-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना
एम.एच.डी-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
एम.एच.डी-14 : हिंदी उपन्यास-1 (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एम.एच.डी-15 : हिंदी उपन्यास-2
एम.एच.डी-16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

मॉड्यूल 'ख' – दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य
एम.एच.डी-18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
एम.एच.डी-19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास
एम.एच.डी-20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

सत्रीय कार्य-2014-15

कार्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं :

अनिवार्य पाठ्यक्रम

एम.एच.डी.-1 : हिंदी काव्य-1

एम.एच.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना

एम.एच.डी.-7 : हिंदी भाषा और भाषाविज्ञान

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

मॉड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी.-13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास

एम.एच.डी.-14 : हिंदी उपन्यास-I (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

एम.एच.डी.-15 : हिंदी उपन्यास-II

एम.एच.डी.-16 : भारतीय उपन्यास

अथवा

मॉड्यूल 'ख' – दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

एम.एच.डी-17 : भारत की चिंतन परंपराएँ और दलित साहित्य

एम.एच.डी-18 : दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप

एम.एच.डी-19 : हिंदी दलित साहित्य का विकास

एम.एच.डी-20 : भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

एच.एच.डी.-5 पाठ्यक्रम 8 क्रेडिट का है। शेष सभी पाठ्यक्रम 4-4 क्रेडिट के हैं। प्रत्येक पाठ्यकम के लिए आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे। विद्यार्थियों को सभी अनिवार्य पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य करने होंगे। लेकिन वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के मॉड्यूल 'क' अथवा मॉड्यूल 'ख' में से किसी एक मॉड्यूल के सभी पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करने होंगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए "विवेचना" नाम से आलोचनात्मक आलेखों के संग्रह भेजे गए हैं। एम.एच.डी.-1 में "विविधा" नामक पुस्तक भी भेजी गई है। साथ ही एम.एच.डी.–17 से 20 तक चार 'विविधा' एवं एक 'विवेचना' नामक पुस्तक भी भेजी गई है।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा के सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपका अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि, रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक : ....
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम का नाम/कोड :	....
सत्रीय कार्य कोड :	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांक : ....

4. उत्तर के लिए **केवल फुलस्केप** के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
6. अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक के पास **जुलाई 2014 सत्र के लिए 31 मार्च 2015 एवं जनवरी 2015 सत्र के लिए 30 सितंबर 2015** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें :

1. आपकी सत्रांत परीक्षा तीन घंटे की होगी और प्रत्येक सत्रीय कार्य भी तीन घंटे में किए जा सकने की दृष्टि से तैयार किए गए हैं। इसलिए सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हुए इस बात का ध्यान रखें कि सभी प्रश्नों के उत्तर तीन घंटे में लिखे जा सकें।
2. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें। आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
3. व्याख्या से संबंधित अंशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा, शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
4. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी-1 : हिंदी काव्य-1 (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
सत्रीय कार्य

सत्रीय कार्य कोड : एम-एच-डी-1/टी-एम-ए/2014-15
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:** **10×4=40**

क) मोकों कहाँ ढूढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।

ख) चरण कमल बंदौ हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे कौ सब कछु दरसाइ।।
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करूनामय बार बार बंदौ तिहिं पाइ।।

ग) माई साँवरे रंग राची। टेक।।
साज सिंगार बाँध पग घूंघर, लोकलाज तज नाची।
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सँगत श्याम प्रीत जग साँची।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची।
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची।।

घ) कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर परागन में पौनहू में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वारे में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखौ दीपदी पन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में,
बनन में बागन में बगर्यो बसंत है।

2. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए:** **15 x 3 = 45**

क) पृथ्वीराज रासो की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।
ख) कबीर के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।
ग) एक कवि के रूप में तुलसीदास का मूल्यांकन कीजिए।

3. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए:** **5 x 3 = 15**

क) घनानंद के काव्य कौशल पर विचार कीजिए।
ख) मीरा की कविता में अभिव्यक्त उनके जीवन संघर्ष को रूपायित कीजिए।
ग) विद्यापति पदावली की विशेषताएँ बताइए।

एम.ए.डी.-5 : साहित्य सिद्धांत और समालोचना

एम.एच.डी.-5, एम.म. हिंदी के द्वितीय वर्ष का अनिवार्य पाठ्यक्रम है।'साहित्य सिद्धांत और समालोचना' शीर्षक इस पाठ्यक्रम में आपने प्राचीन भारतीय साहित्य-चिंतन, पश्चिमी साहित्य-चिंतन और हिंदी ओलोचना का अध्ययन किया है। इस पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

इस सत्रीय कार्य में आपको कुल नौ प्रश्न करते हैं - आठ निबंधात्मक प्रश्न तथा एक टिप्पणीपरक प्रश्न। टिप्पणीपरक प्रश्न में आपको चार विषयों पर टिप्पणियाँ लिखनी हैं। आपकी सत्रांत परीक्षा का ढाँचा भी कुछ हद तक इसी प्रकार का होगा। फर्क केवल इतना है कि यहाँ सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, जबकि सत्रांत परीक्षा में आपके पास विकल्प होगा यानी कि आपको आठ-दस प्रश्नों में से पाँच का उत्तर देना होगा। साथ ही आपसे पूछे गए प्रश्नों की संख्या इतनी होगी कि निर्धारित समय में आप उत्तर दे सकें।

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-05
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी-5/टीएमए/2014-15
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. काव्य लक्षण से आप क्या समझते हैं? संस्कृत और हिंदी में काव्य लक्षण संबंधी चर्चा का उल्लेख कीजिए। — 10

2. रस–निष्पत्ति के संबंध में भारतीय आचार्यों के विचारों पर प्रकाश डालिए। — 10

3. ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाओं का उल्लेख कीजिए। — 10

4. शब्द–शक्तियों का परिचय दीजिए। — 10

5. प्लेटो द्वारा कविता पर लगाए गए आक्षेपों की चर्चा करते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डालिए। — 10

6. जॉन ड्राइडन के आलोचना सिद्धांतों का परिचय दीजिए। — 10

7. कविता के विषय में कॉलरिज के विचारों की चर्चा करते हुए उनके कल्पना सिद्धांत पर प्रकाश डालिए। — 10

8. नयी समीक्षा के प्रमुख सिद्धांतों का परिचय दीजिए। — 10

9. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए। — 5X4=20
   क) मार्क्सवादी आलोचना
   ख) प्रतीकवाद और बिम्बवाद
   ग) काव्य का अधिकारी
   घ) उत्तर आधुनिकतावाद

एम.एच.डी.–7 : हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–7
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–7/टीएमए/2014–15
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 1000-1000 शब्दों में दीजिए। 15X3=45

1 भाषा और संप्रेषण के अंतःसंबंधों पर प्रकाश डालिए।

2 मनोभाषा विज्ञान को परिभाषित करते हुए उसके महत्त्व का उल्लेख कीजिए।

3 अर्थ संरचना के संदर्भ में अर्थ की प्रकृति के विभिन्न पक्षों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में दीजिए। 10X4=40

1. प्रोक्ति का अर्थ बताते हुए प्रोक्ति विश्लेषण पर प्रकाश डालिए।
2. शैली और शैली विज्ञान को परिभाषित करते हुए शैली विज्ञान का महत्त्व बताइए।
3. उद्देश्य केन्द्रित भाषा शिक्षण से क्या तात्पर्य है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. समाज भाषा विज्ञान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ग) निम्नलिखित पर लगभग 250-250 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए। 5X3=15

1. कारक और कारक के भेद
2. मातृभाषा और प्रथम भाषा
3. शब्द और अर्थ

माड्यूल 'क' – उपन्यास : विशेष अध्ययन
(एम.एच.डी.–13 से 16 तक)

एम.एच.डी.–13 : उपन्यास : स्वरूप और विकास
सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-13
सत्रीय कार्य कोड : एमएचडी–13/टीएमए/2014–15
कुल अंक : 100

नोटः निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उपन्यास विधा के उदय के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए। 15

2. उपन्यासों का वर्गीकरण किन-किन आधारों पर किया जा सकता है और क्यों? स्पष्ट कीजिए। 15

3. उन्नीसवीं सदी के प्रमुख फ्रांसिसी उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत कीजिए। 15

4. नवजागरण के संदर्भ में भारतीय भाषाओं में उपन्यास विधा के उदय पर प्रकाश डालिए। 15

5. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियां लिखिए : 5X5=25
   क) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास
   ख) भारतीय उपन्यास की अवधारणा
   ग) उपन्यास और महाकाव्य
   घ) स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास
   ङ) उन्नीसवीं सदी के रूसी उपन्यास

एम. एच. डी.–14
हिन्दी उपन्यास–1
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–14/टी एम ए/2014–2015
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** 10× 4=40

(क) यह सब मेरे कर्मों का फल है। आह! एड़ी में कैसी पीड़ा हो रही है; यह कांटा कैसे निकलेगा? भीतर उसका एक टुकड़ा टूट गया है। कैसा टपक रहा है। नहीं मैं किसी का दोष नहीं दे सकती। बुरे कर्म तो मैंने किए हैं, उनका फल कौन भोगेगा! विलास–लालसा ने मेरी यह दुर्गती की। मैं कैसी अंधी हो गई थी, केवल इन्द्रियों के सुखभोग के लिए अपनी आत्मा का नाश कर बैठी! मुझे कष्ट अवश्य था। मैं गहने–कपड़े को तरसती थी, अच्छे भोजन को तरसती थी, प्रेम को तरसती थी। उस समय मुझे अपना जीवन दुःखमय दिखाई देता था, पर वह अवस्था भी तो मेरे पूर्वजन्म के कर्मों का ही फल था। और क्या ऐसी स्त्रियाँ नहीं हैं, जो उससे अधिक कष्ट झेलकर भी अपनी आत्मा की रक्षा करती हैं?

(ख) क्षण मात्र में ज्ञानशंकर के विचारों ने पलटा खाया। जब तक उन्हें शंका थी कि राय साहब दम तोड़ रहे हैं तब तक वह उनकी प्राण–रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। जब बाहर खड़े–खड़े निश्चय हो गया कि राय साहब के प्राणान्त हो गए तब वह अपनी जान की खैर मनाने लगे। अब उन्हें सामने देखकर कोध आ रहा था कि यह मर क्यों न गए! इतना तिरस्कार, इतना मानसिक कष्ट व्यर्थ सहना पड़ा! उनकी दशा इस समय उस थके–माँदे हलवाहे की–सी हो रही थी जिसके बैल खेत से द्वार पर आकर विदक गए हों, दिन–भर के कठिन परिश्रम के बाद सारी रात अंधेरे में बैलों पीछे दौड़ने की सम्भावना उसकी हिम्मत को तोड़े डालती हो।

(ग) नीति –चतुर प्राणी अवसर के अनुकूल काम करता है। जहाँ दबना चाहिए, वहाँ दब जाता है; जहाँ गरम होना चाहिए, वहाँ गरम होता है। उसे मानापमान का हर्ष या दुःख नहीं होता। उसकी दृष्टि निरंतर अपने लक्ष्य पर रहती है। वह अविरल गति से, अदम्य उत्साह से उसी ओर बढ़ता है; किन्तु सरल, लज्जाशील, निष्कपट आत्माएँ मेघों के समान होती हैं, जो अनुकूल वायु पाकर पृथ्वी को तृप्त कर देते हैं और प्रतिकूल वायु के वेग से छिन्न–भिन्न हो जाते हैं। नीतिज्ञ के लिए अपना लक्ष्य ही सब कुछ है, आत्मा का उसके सामने कुछ मूल्य नहीं। गौरव–संपन्न प्राणियों के लिए अपना चरित्र–बल ही सर्वप्रधान है। वे अपने चरित्र पर किए गए आघातों को सह नहीं सकते। वे अपनी निर्दोषता सिद्ध करने को अपने लक्ष्य की प्राप्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं।

(घ) मैंने जज साहब से सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाने का निश्चय कर लिया है। इसी इरादे से इस वक्त चला हूँ। मेरी वजह से इनको इतने कष्ट हुए, इसका मुझे खेद है। मेरी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ था। स्वार्थ ने मुझे अंधा कर रक्खा था। प्राणों के मोह ने, कष्टों के भय ने बुद्धि हर ली थी। कोई ग्रह सिर पर सवार था। इनके अनुष्ठानों ने उस ग्रह को शांत

कर दिया। शायद दो–चार साल के लिए सरकार की मेहमानी खानी पड़े। इसका भय नहीं। जीता रहा तो फिर भेंट होगी। नहीं मेरी बुराइयों को माफ करना और मुझे भूल जाना। तुम भी देवी दादा और दादी, मेरे अपराध क्षमा करना। तुम लोगों ने मेरे ऊपर जो दया की है, वह मरते दम तक न भूलूंगा। अगर जीता लौटा, तो शायद तुम लोगों की कुछ सेवा कर सकूं। मेरी तो जिंदगी सत्यानाश हो गई। न दीन का हुआ न दुनिया का।

2. निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 12×4=48

(क) प्रेमचंद के आदर्शवाद एवं यथार्थवाद संबंधी विचारों का विश्लेषण कीजिए।

(ख) 'ज्ञानशंकर' की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

(ग) 'सूरदास' और गाँधी जी के विचारों की समानताओं एव असमानताओं पर विचार कीजिए।

(घ) गबन के प्रमुख पुरुष पात्रों के आधार पर मध्यवर्गीय मानसिकता का विश्लेषण कीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 4×3=12

(क) 'सेवासदन' की मूल समस्या

(ख) जालपा का चरित्र

(ग) प्रेमचंद की कहानियाँ

एम. एच. डी.–15
हिन्दी उपन्यास–2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–15/टी एम ए/2014–2015
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :** 10× 4=40

(क) मैं आर्थिक प्रश्नों के लिए परामर्शदाता हूँ। बिना पूछे मैं कोई सलाह नहीं दे सकता। गर्वनर भी जानता है कि यूनियनिस्ट मिनिस्ट्री के दिन गए। इस चुनाव से यह स्पष्ट हो गया है। मुझसे गर्वनर ने पंजाब के किसानों में फैले असंतोष के आर्थिक कारणों के विषय में रिपोर्ट मांगी थी। उसे मालूम है कि किसान भूमि व्यवस्था में परिवर्तन के लिए विद्रोह करने पर तुले हैं। यूनियनिस्ट मिनिस्ट्री उन्हें दबा नहीं सकेगी। सब शासन व्यवस्थाओं की नींव सामयिक भूमि व्यवस्था पर ही होती है। किसानों की ओर से सरकार पर आते संकट को टालने का फिलहाल यही उपाय हो सकता है कि वे अपनी समस्या साम्प्रदायिक झगड़ों में भूले रहें।

(ख) फ़रमान अली ने लस्सी का कटोरा खाली कर नीचे रखा और डपटकर कहा, "पूत्तरा, वित्त में रह। कॉंटोंवाले झाड़ी–बूटी के बेर उगाने चला है क्या ! ओ भोलया, शाहों की मलकीयतें लाल बहियों में और हमारी अपने वजूदों में! शाह जितना हाथ फैलाए सो उसका। जट्ट जितना पसीना बहाए सो उसका।"

मॉंबीबी ने भी घुड़की दी–"मेहरअली, जट्ट पुत्तर होकर तेरी ऐसी हकूमती अदा! तभी तो खै़र–सल्ला मसीते दो–चार सपारे ही याद किए हैं। अरे, शाहों की मालकी चोरी–चाकरी और डाकजेनी से नहीं जो उन पर गुस्से–गिले कर रहा है।"

मेहरअली ने घी–लगी दुप्पड़ के चार टुकड़े किए और निवाला मुँह में डालकर कहा,

"दूध–मलाई धनाढ शाहों की और छाछ–लस्सी हमारी! लानत हमारी मेहनतों पर!"

"बस ओए शोख़ीखोरे, चिड़ियों के दूध पर नज़र रखी तो हाथों से खाली तोते उड़ाएगा।"

(ग) माणिक मुल्ला का दखल जितना राजनीति में था उतना ही प्रेम में था, लेकिन जहाँ तक साहित्यिक वार्ता का प्रश्न था वे प्रेम को तरजीह दिया करते थे।

प्रेम के विषय में बात करते समय वे कभी–कभी कहावतों को अजब रूप में पेश किया करते थे और उनमें से न जाने क्यों एक कहावत अभी तक मेरे दिमाग़ में चस्पॉं है, हालॉंकि उसका सही मतलब न मैं तब समझा था न अब! अकसर प्रेम के विषय में अपने

कड़वे–मीठे अनुभवों से हम लोगों का ज्ञानवर्धन करने के बाद खरबूज़ा काटते हुए कहते थे, "प्यारे बन्धुओ! कहावत में चाहे जो कुछ हो, प्रेम में ख़रबूजा चाहे चाकू पर गिरे चाहे चाकू खरबूजे पर, नुकसान हमेशा चाकू का होता है। अतः जिसका व्यक्तित्व चाकू की तरह तेज और पैना हो, उसे हर हालत में इस उलझन से बचना चाहिए"। ऐसी अन्य काहवतें थीं जो याद आने पर बाद में लिखूँगा।

(घ) हमारे इतिहास में –चाहे युद्धकाल रहा हो, या शान्तिकाल–राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबन्दी द्वारा 'मैं' को 'तू' और 'तू' को 'मैं' बनाने की शानदार परम्परा रही है। अंग्रेजी राज में अंग्रेजों को बाहर भगाने के झंझट मे कुछ दिनों के लिए हम उसे भूल गए थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परम्पराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबन्दी को तू–तू मैं–मैं, लात–जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदान्त को जन्म देने वाले देश की उपलब्धि है। यही, संक्षेप में, गुटबन्दी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।

2. **निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :** $12\times4=48$

(क) अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'झूठा सच' कहाँ तक सफल है। विश्लेषण कीजिए।

(ख) कृष्णा सोबती की प्रमुख औपन्यासिक कृतियों का विवेचन कीजिए।

(ग) नवीन शिल्प की दृष्टि से 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की समीक्षा कीजिए।

(घ) 'रागदरबारी' की भाषा पर निबंध लिखिए।

3. **निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए :** $4\times3=12$

(क) 'झूठा सच' में जनजीवन का अंकन

(ख) माणिक मुल्ला का चरित्र

(ग) 'रागदरबारी' में राजनीति

एम. एच. डी.–16 भारतीय उपन्यास
सत्रीय कार्य
(खंड 1, 2, 3 और 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–16
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–16/टी.एम.ए./2014–2015
कुल अंक : 100

कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सातवाँ प्रश्न अनिवार्य है। 15× 4=60

1. 'चेम्मीन' की भाषा के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. संस्कार में निहित सामाजिक चेतना को रेखांकित कीजिए।
3. बांगला उपन्यास साहित्य में महाश्वेता देवी का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. आपके अनुसार संस्कार का केन्द्रीय चरित्र कौन है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
5. 'मानवीनी भवाई' मानव गौरव की कथा है –इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
6. मलयालम में उपन्यास लेखन की परंपरा को रेखांकित कीजिए।
7. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10× 4=40

   1. चेम्मीन में मिथक
   2. गुजराती साहित्य में गाँव
   3. बंकिम चन्द्र
   4. पन्नालाल पटेल
   5. बिरसा मुण्डा का चरित्र

मॉड्यूल 'ख'– दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–17

'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड:एम.एच.डी.–17/टी.एम.ए/2014–1015

कुल अंक:100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग **200 शब्दों** में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 10×4=40

(क) आदि से अंत तक अशौच समाया।
स्पृश्य कौन जन्मा न।।
हीन दीन जात मोरी पंढरी के राया।
ऐसा तुमने नामा दरजी कायक बनाया।
मेरी कौन गति गुसाई।
तुम जगत भरन देवा।।
जन्महीन करम छीन भूलि गयौ सेवा।।

(ख) पंडिया कौन कुमति तोहिं लागे।
बूढ़हू गे परवार सकल स्यों राम न जयहु अभागे।
वेद पुरान पढ़े का किया गुन खर चन्दन सा भारा।
राम नाम की गति नहीं कैसे उतरसि पारा।

(ग) ब्रह्मणेंहिं म जानन्त ही भेउ। एवइ पढ़िअउ ए चउवेउ।।
मट्ठी पाणी कुस लइ पढ़न्ते। घरहिं बइसी अग्गि हुणन्तं।।
कज्जे विरहिअ हुअवह होमें। आखि उहाविअ कडुएं घूमें।।
एकदण्डी त्रिदण्डी भअवं वेसें। विडुआ होइअह हंस उएसें।।
मिच्छेंहि जग वाहिअ भुल्ले। धम्माधम्म ण जाणिअ तुल्ले।।

(घ) अवधू सहज सुंनि उतपनां। सभि सुंनि सतगुरु बुझाई।।
अतीत सुंनि मैं रहया समाइ। परम तत्व मैं कहूं समुझाई।।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **500 शब्दों** में दीजिए: 10×4=40

(क) आर्य नागार्जुन के प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत का महत्व सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
(ख) धर्मकीर्ति के क्षणिकवाद के सिद्धांत का निरूपण करें।
(ग) चार्वाक दर्शन के मानवतावादी चेतना का विश्लेषण कीजिए।
(घ) निर्गुण संत कवियों की सामाजिक भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **100 शब्दों** में दीजिए: 5×4=20

(क) संत वेमना एक महान मानवतावादी संत थे, इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
(ख) मिलिन्द और नागसेन के बीच हुए संवाद लोकतांत्रिक परंपरा का आरंभ है स्पष्ट कीजिए।
(ग) आर्य असंग के दार्शनिक विचारों का मूल्यांकन कीजिए।
(घ) सिद्ध परंपरा के प्रचार-प्रसार में स्त्री और शूद्रों के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–18
(दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडःएम.एच.डी.–18/टी एम ए/2014–15
कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **'दस'** प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। **10×10=100**

1. 'दलित' शब्द के समानार्थी शब्दों की अर्थवत्ता स्पष्ट करते हुए उसके अस्मितागत स्वरूप को रेखांकित कीजिए।
2. दलित साहित्य के प्रयोजन एवं सरोकारों की विवेचना कीजिए।
3. 'गुलामगिरी' के आधार पर सामाजिक गुलामी की धारणा पर चर्चा कीजिए।
4. 'डॉ. आंबेडकर के दलित मुक्ति आंदोलन ने भारतीय लोकतांत्रिक समझ को मानवीय सरोकार और प्रगतिवादी समझ से सम्पन्न किया।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।
5. डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में लड़े गए मुक्ति संग्राम के विविध पड़ावों का विस्तार से चर्चा कीजिए।
6. 'महात्मा जोतिबा फूले का चिंतन बहुजन समाज की मुक्ति का चिंतन है।' इस कथन को विस्तार दें।
7. 'संविधान निर्माता डॉ. आंबेडकर, समाजवादी जनतंत्र के पक्ष में खड़े थे।' इस कथन की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
8. डॉ. आंबेडकर के स्त्री मुक्ति चिंतन और स्त्री अधिकारों के लिए संवैधानिक प्रयासों की चर्चा कीजिए।
9. पेरीयार ई.वी. रामास्वामी नायकर के आत्मसम्मान आंदोलन की क्रांतिकारी भूमिका स्पष्ट करें।
10. दक्षिण भारत में श्री नारायण गुरू के चिंतन से निर्मित हुई स्त्री चेतना की चर्चा कीजिए।
11. दलित आलोचना के सरोकारों में श्रम के सौन्दर्यशास्त्र की प्रतिष्ठा है'– विवेचना कीजिए।
12. हिंदी आलोचना की परंपरा में दलित आलोचना सक्रिय हस्तक्षेप है, स्पष्ट कीजिए।
13. दलित साहित्य में आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर प्रखर क्यों है? संदर्भ देते हुए स्पष्ट कीजिए।
14. दलित साहित्य में मिथकों का प्रयोग किस रूप में हुआ है? सविस्तार लिखिए।

सत्रीय कार्य एम.एच.डी.–19
हिंदी दलित साहित्य का विकास
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

सत्रीयकार्य : एम.एच.डी.–19 / टीएमए / 2014–15
कुल अंक:100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही **दो** की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10×2=20

(क) मेरे और तुम्हारे बीच एक रेतीला दूह है।
जो किसी अंधड़ का इंतजार करने से पहले।
किसी भी वक्त फट सकता है
जिसके गर्भ से निकलेंगे
घृणा में लिपटे कुटिल शब्द
जिन्हें जलना होगा
दहकती भट्ठी में
रोटी की महक में बदलने के लिए

(ख) यदि यह विधान लागू हो जाता
कि तुम्हें धन-सम्पत्ति रखने का अधिकार नहीं।
तुम जिन्दा रहो हमारी जूठन पर,
हमारे दिये हुए पुराने वस्त्रों पर,
तुम्हें अधिकार न हो पढ़ने-लिखने का,
तुम्हारे बच्चे सेवक बने हमारे
पीढ़ी-दर-पीढ़ी
हम रहे तुम्हारे शासक
तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

(ग) प्रचलित परिपाटी से हटकर
मैं भागती हूँ सब ओर एक साथ
विद्रोहिणी बन चीखती हूँ
गूँजती है आवाज सब दिशाओं में
मुझे अनन्त असीम दिगन्त चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए।
मुझे अनन्त आसमान चाहिए।।

(घ) हम जानते हैं
हमारा सब कुछ
भौंडा लगता है तुम्हें।
हमारी बगल में खड़ा होने पर
कद घटा है तुम्हारा
और बराबर खड़ा देख
भवें तन जाती हैं।
सुनो भूदेव

तुम्हारा कद
उसी दिन घट गया था
जिस दिन कि तुमने
न्याय के नाम पर
जीवन को चौखटों में कस
कसाई बाड़ा बना दिया था।
और खुद को शीर्ष पर
स्थापित करने हेतु
तले ठुकवा दिये थे
चौमंजिल जीने से।

(ङ) द्रोण की परंपरा के पृष्ठ पोषक सुनो!
अब और जाल मत बुनो।
जाल को रहने दो
अंधेरे की गहन गुफा को घाव सहने दो।
जाओ द्रोण जाओ दर्द को हरियाने दो।
एकलव्य मैं पहला था, आज भी हूँ।
अब जान गया हूँ।
अंगूठा दान क्यों माँगते हो?

2. निम्नलिखित कथ्यांशों में से किन्ही **दो** की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10×2=20

(क) वह उसी तरह अभावग्रस्त टूटी-फूटी बस्ती में सुअरों के बीच मुर्दे जलाते हुए उड़ती धूल और श्मशान के वीराने में रहता है, रहता रहेगा। दुनिया कहाँ-से-कहाँ निकल जाएगी, लेकिन उसकी दुनिया फ्रेम में जड़ी एक बदरंग तस्वीर की तरह इसी प्रकार जड़ और ठहरी हुई रहेगी।

(ख) 'बहिन ये सरकार और थानेदार इन बलात्कारियों को सजा नहीं दे सकते। ये सब तो नपुंसक हो गए हैं। तू खड़ी हो जा और मेरा साथ दे। उन्हें सजा हमें ही देनी पड़ेगी। जिसकी बहन बेटी पर गुजरती है, उसे ही पता लगता है।'

(ग) 'नहीं बेटे......पच्चीस चौका सौ नहीं ....पच्चीस चौका डेढ़ सौ......। तेरी किताब में गलत भी हो सके नही तो क्या चौधरी झूठ बोलेंगे? तेरी किताब से कहीं ठाड्डे (बड़े) आदमी हैं चौधरी जी। उनके धोरे (पास) तो ये मोटी-मोटी किताबें हैं......... वह जो तेरा हेडमास्टर है वो बी पांव छुए हैं चौधरी जी के। फेर भला वो गलत बतावेंगे मास्टर से कहना सही-सही पढ़ाया करे...... ।'

(घ) 'साहेब, अब इस बस्ती में नहीं रहा जाता........कहीं कोई सुनवाई नहीं, सरकारी दफ्तर में अरजी देते-देते गोड़ टूट गए। आप तो दयावान हैं, कुछ पानी का इंतजाम हो जाता तो बस्ती के लोग आसीस देते।'

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए। 10×4=40

(क) दलित साहित्य आंदोलन की पृष्ठभूमि, परंपरा और स्वरूप पर एक निबंध लिखिए।

(ख) 'घृणा तुम्हें मार सकती है' कविता सामंतवादी समाज की घृणित सच्चाई को उजागर करती है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(ग) दलित कहानी की सोद्देश्यता की विवेचना कीजिए।

(घ) दलित उत्पीड़न के संदर्भ में स्वानुभूति और सहानुभूति के सवाल को 'आमने-सामने' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ङ) डॉ. आंबेडकर की वैचारिकी के प्रभाव में दलित आत्मकथनों ने दलित जीवन की भीषण वास्तविकता को उजागर किया। 'जूठन' आत्मकथन की रोशनी में इसको स्पष्ट कीजिए।

(च) दलित आत्मकथन दलित जीवन के दस्तावेज हैं। विवेचना कीजिए।

(छ) 'अपने-अपने पिंजरे' के संरचनागत वैशिष्ट्य का उद्घाटन कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए। 10×2=20

(क) अवमानना और बहिष्कार के यातनाजनक अनुभव व्यक्तित्व को बौना बना देते हैं। इस कथन की पुष्टि जूठन के माध्यम से कीजिए।

(ख) ज्ञान से वंचित किए जाने की धर्माधारित परंपरा पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

(ग) दलित कहानी के वैशिष्ट्य की विवेचना कीजिए।

(घ) 'वैतरणी' कहानी में प्रयुक्त शिल्प और भाषागत सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

(ङ) दलित स्त्री के तिहरे शोषण को 'सुमंगली' कहानी के माध्यम से समीक्षा कीजिए।

सत्रीय कार्य एम.एच.डी.–20
भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य
पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित

सत्रीयकार्य : एम.एच.डी.–20/टीएमए/2014–15
कुल अंक:100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग **200 शब्दों** में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10×4=40

(क) घर में पुरूषाहंकार एक गाल पर थप्पड़ मारता है
तो गली में वर्ण-अधिपत्य
दूसरे गाल पर
मजूरी के पैसे लेने खेत गई
तो वहां आसामी पसीने के साथ
जब मुझे ही लूटने के ताक में था
मुझे लगा कि मैं बीज बनकर धरती में समा जाऊं
युगों से पढ़ाई से दूर
हॉस्टल की गोद के करीब होने पर
वहां भी वार्डन की भूखी नज़रें झेल नहीं सकने के कारण
लगा कि दूर फेंक दूं

(ख) शामपहर में पल्लू की गांठ खोलकर
तेल नमक खरीदती
पांच पैसे मेरी हथेली पर धर कहती
मिठाई लेकर खा, लेकिन स्कूल जरूर जाना
पालने के नन्हें को दूध से लगाती
कहती– "आंबेडकर जैसे बनना बेटा
तब ही छुटेगा हाथ का तसला"
तुझे कहते सुना मैंने माँ

(ग) उसकी अपनी दौड़ है
हरी या सूखी घास का ढेर
थोड़ा-सा छोलिया
पेट भर पानी
उसके पैरों में नालें हैं
पीठ पर टिकी है काठी
मुंह में पड़ी है लोहे की लगाम
घोड़े का सदियों से वास्ता है
नोकदार जूती वाले सवार से
मुलायम मूठ वाले चाबुक से
कभी नरम, कभी गरम

सवार की कड़क से।

(घ) गली-गली के कोनों में
सारी बस्ती के चेहरे पर रौनक थी
निकल पड़े थे सब अपने घरों से
मैं हाथों में पत्थर लेकर गिद्धों पर
फेंका करता था
उनको दूर भगाता था
गिद्ध भी हम पर गुस्सा करते थे
मुझे बराबर याद है

2. निम्नलिखित में सें **चार प्रश्नों** के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10×4=40

(क) 'कवच' कहानी में दलित स्त्री के तिहरे शोषण को उजागर किया गया है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'जब मैंने जाति छुपाई' कहानी में अभिव्यक्त जातिभेद की जटिलता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'रोटले को नजर लग गई' कहानी में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान को स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'परती जमीन' कहानी आर्थिक शोषण के जातिपरक ढाँचे को उजागर करती है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ङ.) 'हड्डा रोड़ी और रेहड़ी' कहानी में प्रस्तुत आर्थिक शोषण में जाति संरचना की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

(च) 'अक्करमाशी' होने के अहसास से गुजरते लेखक के मानसिक अंतर्द्वन्द्व की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए।

(छ) दलित मुक्ति आंदोलन और दलितों में उभरे आत्मबोध के कारणों का 'जीवन हमारा' के माध्यम से विवेचन कीजिए।

(ज) दलित जीवन की भीषण सच्चाई का 'मशालची' के माध्यम से विवेचन कीजिए।

(झ) 'अस्पृश्य वसंत' उपन्यास में धर्म परिवर्तन की स्थितियों को उजागर किया है। धर्म परिवर्तन के कारणों की पड़ताल कीजिए।

निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। 5×4=20

1. घोड़ा कविता के रूपक की योजना
2. पड़ कविता में प्रस्तुत जजमानी प्रथा
3. 'बुद्ध ही मरा पड़ा है' कहानी के नायक अशोक
4. 'कवच' कहानी का बाल चरित्र 'गौन्या'
5. 'गाँव का कुआं' कहानी का चरित्र चिदंबरम
6. 'मोची की गंगा' कहानी की भाषा और शिल्प
7. 'जीवन हमारा' आत्मकथन के नाना की परिवर्तनकामी चेतना
8. 'अस्पृश्य वसंत' के चरित्र चित्रण रूबेन